

सच्ची शिवरात्रि कैसे मनाये

वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है, विकार विष को छोड़कर शिव पिता से प्रीति जोड़ी
बेहद के निराकार बाप परमात्मा शिव से स्वर्ग का कर्सी लो और सभी को जीवन मुक्ति प्रदान होती है।

जान कलश से ही स्वर्ग के द्वार मिलते हैं
वर्तमान समय ही रात्रि है।



बलि चढ़ाना याने मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित आक, धतूरा चढ़ाना याने विषयों, विकारों को चढ़ाना

हमें आत्मा का जागरण करना चाहिए, ब्रह्मचर्य व्रत के साथ शुभ व श्रेष्ठ वृत्ति धारण करने का व्रत लेना चाहिए। शिव के प्रति ज्ञान का बिन्दु-बिन्दु निरंतर प्रवाहित करने रहना चाहिए। शिवरात्रि मनाने की इसी सच्ची रीति को अपनाकर हमें अवतरदानी शिवबाबा से इसी जन्म में मुक्ति व जीवन मुक्ति के सर्वश्रेष्ठ वरदान ले लेने हैं

जान ही वह सोम रस्य है जिसके द्वारा आत्मा को शीतलता तथा शांति उपलब्ध होती है।
जान गंगा जिससे आत्मा पावन करती है



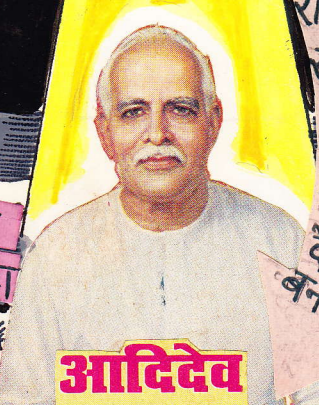
आत्मदर्शन रूपी चक्र
जान गंगा द्वारा ब्रह्म समाप्त करना

शंख रूपी मुख द्वारा ज्ञान युक्त मधुर बोल



जान लेत्र त्रिशूल अर्थात् स्व, बाप व शैमा की स्मृति लेत्रों तथा भित्तो बलि
विकार रूपी सर्प को अधीन किया
जान उमरु द्वारा विधवा आध्यात्मिका
काम क्रोध वशा कर एक रस आसन में स्थित

लिंग → ल अर्थात् लय (विनाश) और ग कार्य कराने वाले हैं इसलिए ज्योतिर्लिंग कहा



आदिदेव

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा

अर्थात् गमन (नई रचना) शिव यह देना है शिवलिंग शिव की प्रतिमा है न कि ब्रह्माण्ड की

शिव ने बद्ध आत्माओं रूपी पशुओं को पशुपतिनाथ अथवा मुक्तेश्वर हुआ, मनुष्यों

माया के पाशों से मुक्त किया इसलिए उनका नाम के दुःखों को हरा इसलिए हर अथवा दुःखहर्ता कहलव

अकाल तस्त अथवा भागीरथ जिनके शरीर रूपी रथ द्वारा शिव ने गीता ज्ञान गंगा प्रवाहित की